मार्क्सवाद

कार्ल मार्क्स जर्मनी के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, दर्शनशास्त्री, समाजवादी विचारक रहे हैं। उन्होंने द्वंद्वात्मक भौतिकवाद एवं वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांतों की स्थापना कर युगानुकूल क्रांतिकारी कार्य किया था। उनका जन्म 5 मई 1818 ई.सन में जर्मनी के ट्रायर नगर में एक संपन्न परिवार में हुआ था। ये यहूदी वंश में उत्पन्न हुए थे और इनके पिता एक वकील थे जो प्रोटेस्टेंट ईसाई हो गए थे। इस धर्म परिवर्तन का मार्क्स के ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा और वह सभी धर्मों से मुक्त हो गए। इनकी प्रारंभिक शिक्षा ट्रायर में हुई। 1836 में कानून और दर्शन पढ़ने के लिए थे। बर्लिन यूनिवर्सिटी में दाखिल हुए। इस समय हीगेल के दर्शन से इनका परिचय हुआ। आगे चलकर उन्होंने जाना कि ईसाई धर्म कथाओं में ऐतिहासिकता नहीं वरना वह कपोल कल्पनाएं हैं। अपने क्रांतिकारी लेखों और वक्तव्यों के कारण इन्हें जर्मनी छोड़कर जाना पड़ा। आगे वहाँ से होलण्ड और लंदन। इनका विवाह 1843 में जेनी से हुआ। इनका परिचय लंदन में फ्रेडरिक एंजिल्स से हुआ। दोनों ने मिलकर 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो 1847 में लिखा जो आगे साम्यवादियों के लिए बाइबल सिद्ध हो। इसी बीच 'पावर्टी ऑफ फिलॉसफी' की भी रचना हुई। 1807 में मार्क्स की 'दास कैपिटल' पुस्तक प्रकाशित हुई जिसने विश्वभर में तहलका मचा दिया। यह मजदूर वर्ग के लिए वेद, कुरान, बाइबल सिद्ध हुई। आजकल यह पुस्तक साम्यवादी संसार की मार्गदर्शक है।

मार्क्स जितने बड़े दार्शनिक और विचारक थे उतने ही बड़े कर्मठ व्यक्ति थे। उनका सारा चिंतन संसार को एक व्यवहारिक समानता और खुशहाली की ओर ले जाने में लगा था। उनका सारा जीवन इसी कार्य में लगा। यहाँ तक कि उनका पारिवारिक जीवन भी प्रायः समाप्त हो गया। उन्होंने अपने विचारों से एक नई दुनिया का निर्माण किया। विश्व की अर्थव्यवस्था पर उनके विचार मौलिक और क्रांतिकारी हैं। मार्क्स की मृत्यु लंदन में 14 मार्च 1883 ई. सन में हुई।

मार्क्स ने 'दास कैपिटल' ग्रंथ द्वारा विश्व के सभी मजदूरों को आवाहन किया –
" मजदूरों एक हो जाओ क्योंकि तुम्हें जकड़नेवाली जंजीरों को तोड़ने का समय आ गया है। यदि आप एक हो जाएंगे तो आपकी गुलामगिरी नष्ट हो जाएगी। अंतिम विजय आपकी होगी। एक होकर पूंजीपतियों के विरुद्ध संघर्ष करो, उनको कुचल डालो, काट डालो, उनका कत्ल करो, उनकी संपत्ति जबरदस्ती ले लो और वह संपत्ति सभी लोगों में बांट दो। ऐसे करने से कोई मालिक नहीं रहेगा, कोई मजदूर नहीं रहेगा, कोई भूखा नहीं रहेगा तो संघर्ष अपने आप खत्म हो जाएगा। संघर्ष न होने के कारण पुलिस जैसी यंत्रणा की आवश्यकता नहीं रहेगी। राष्ट्र की सभी सीमाएं नष्ट हो जाएगी और पूरा विश्व साम्यवादी बनेगा"।

मार्क्स को आधा विश्व भगवान मानता था तो आधा विश्व राक्षस। जो भी कुछ हो मार्क्स युग प्रवर्तक थे। उनके मतानुसार समाज में दो वर्ग है –

1) अल्पसंख्याक पूंजीपतियों का वर्ग
2) मजदूरों का वर्ग

मजदूरों की हालत देखकर, उनका दयनीय जीवन देखकर मार्क्स ने उनका पक्ष लिया। उनको जागृत करने का प्रयास किया। अपने साम्यवाद के जाहिरनामा में उन्होंने स्पष्टतः घोषित किया कि "साम्यवाद का ध्येय प्राप्त करना है तो आज की समाज व्यवस्था हिंसात्मक पद्धति से उखाड़ने पड़ेगी।"

मार्क्स के आधारभूत सिद्धांत :--

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद :-- मार्क्स ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इसमें दो शब्द महत्वपूर्ण है।– 1) द्वंद्व 2) भौतिकवाद

by Dr. Sangita Chitrakoti

'द्वंद्व' का अर्थ है 'वाद-विवाद करना' जिसके द्वारा लोग एक दूसरे से तार्किक विवाद करके सत्य का अन्वेषण करते हैं । अतः द्वंद्व सत्य को पाने का बौद्धिक साधन है। मार्क्स के विचारों के अनुसार समाज के विकास में दो परस्पर विरोधी शक्तियां दिखाई देती है। प्रत्येक वस्तु में दो प्रवाह होते हैं।

उदाहरणार्थ – रोज-प्रतिरोज, गति-अधोगति

हमेशा दो वस्तुओं में संघर्ष होता है। उसी संघर्ष से विकास होता है। मार्क्स के अनुसार इस जगत की व्युत्पत्ति एवं विकास भौतिक शक्तियों के द्वंद्व से होता है। दो वस्तुओं एवं शक्तियों के इस संघर्ष से तीसरी वस्तु की उत्पत्ति होती है और यह क्रम उत्तरोत्तर बढ़ता है। यह विकास क्रम आगे बढ़ता है।

मार्क्स की सृष्टि की उत्पत्ति के पीछे किसी आध्यात्मिक शक्ति को स्वीकार नहीं करता। उसके अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति नहीं बल्कि इसका उत्तरोत्तर विकास हुआ। यह भौतिक जगत द्वंद्व से अपने विकास का कारण बना है।

द्वंद्व के कारण विकास होता है। पूंजीपति और मजदूर इन दोनों में द्वंद्व निश्चित होता है। इसी द्वंद्व के कारण समाज में गति रहती है। यह द्वंद्व एक प्राकृतिक स्थिति है।

उदाहरणार्थ – ज्वार के दाने का उद्धार

जब कोई दाना खेत में बोया जाता है तो जमीन की नरमी और गर्मी के कारण उसमें अंकुर उत्पन्न होता है। वह दाना स्वयं नष्ट होता है और अपने स्थान पर कई दानों को जन्म देता है। दूसरी बात यह है कि पहली बीज की तुलना में नया बीज अधिक सरस होता है। अर्थात हम कह सकते हैं कि प्रत्येक वस्तु में परस्पर विरोधी तत्व होते हैं। उनमें द्वंद्व चलता है और समाज का विकास होता है।

ऐतिहासिक द्वंद्व : –

ऐतिहासिक द्वंद्व के लिए वर्ग महत्वपूर्ण है। पूरा इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। अति प्राचीन काल में संपूर्ण जगत में साम्यवाद था। कोई किसी का मालिक नहीं था कोई किसी का गुलाम नहीं था। कालांतर में कुछ लोगों में बुद्धि का विकास हो गया और वहीं पर वर्ग संघर्ष की पहली चिंगारी भड़क उठी। स्वार्थ की भावना निर्माण हो गई। बुद्धिवादियों ने जमीन पर कब्जा कर लिया। जिसके पास बुद्धि नहीं थी वह गुलाम बन गए। जो लोग जमीन प्राप्त नहीं कर सके वे भूदास बन गए और जमींदार तथा भूदास संघर्ष निर्माण हो गया। आधुनिक युग औद्योगिक युग बन गया। जिन्होंने यंत्रों पर अधिकार जमाया वे पूंजीपति बन गए और जो लोग यंत्रों पर अधिकार नहीं जमा पाए वे मजदूर बन गए। इस तरह यदि इतिहास का अध्ययन करेंगे तो पता चलता है कि हर युग में संघर्ष होता आया है।

वर्गसंघर्ष : –

इतिहास को देखने के बाद यह ज्ञात हो जाता है कि हर युग में संघर्ष रहा है। हर युग में जो उपेक्षित, पीड़ित, गरीब, निर्धन वर्ग था वह संगठित हुआ और संगठित होने के बाद पूंजीपतियों के विरुद्ध उन्होंने संघर्ष किया। वैसे देखा जाए तो पूंजीपति वर्ग है इसका कारण है। औद्योगिक युग में मजदूर अपने परिवार से दूर हो गए। उनके परिवार को दूर करके कारखानों के पास नए-नए शहरों में आने लिए मजबूर किया। इन मजदूरों की अनेक समस्याएं हैं – जिसमें पूंजीपतियों का शोषण प्रमुख है। इनके संगठन के लिए असल में पूंजीपति ही जिम्मेदार है। उन्होंने स्वयं अपनी कबर खोदी। पूंजीपतियों के कारण संपत्ति का केंद्रीकरण हो जाता है। इसमें छोटे-छोटे उत्पादक भी बाहर फेंके जाते हैं। मजदूर भी आखिर में अपने समस्याओं को दूर करने के लिए संगठित होकर संघर्ष करते हैं।

अतिरिक्त मूल्य सिद्धांत : –

किसी भी वस्तु का मूल्य, उसकी माँग और माँग के अनुसार उत्पादन पर निर्भर रहता है। यह एक अर्थशास्त्रीय तत्व है। मार्क्स के अनुसार भूमि, श्रम, पैसा और संयोजन इन चार बातों पर उत्पादन मूल्य तय होते हैं। जिन वस्तुओं के लिए अधिक श्रम लगता है। उसकी कीमत अधिक होती है। जिन वस्तुओं के लिए कम परिश्रम लगता है उसका मूल्य कम रहता है। यह तत्व मार्क्स ने स्वीकारा था। लेकिन आगे चलकर वह कहता है कि उस वस्तु की उपयोगिता कितनी है, उस पर भी उसका स्वरूप निर्धारित रहता है। वस्तु प्राप्त करने के लिए कभी-कभी कितनी भी कीमत हम देने के लिए तैयार हो जाते हैं। वस्तु निर्मिति के लिए कच्चा माल, यंत्र सामग्री, संगठन इनका भी महत्व रहता है।

आजकल पूंजीपति वर्ग मजदूरों की समस्या का फायदा उठाकर श्रमिकों को उनके श्रम का पूरा पैसा नहीं देता। मजदूरों को कम से कम तनख्वाह देकर होने वाला मुनाफा वह अपने लिए रखते हैं। ज्यादा से ज्यादा मुनाफा केवल पूंजी पतियों को मिलता है। अतः मार्क्स ने कहा कि पूंजीपतियों के विरुद्ध संघर्ष करो क्योंकि वे अतिरिक्त मूल्य नहीं देते।

उदाहरणार्थ – यदि 8 घंटे के लिए महदूर को , ₹30 मिलते हैं पर जब वह अधिक काम करता है तो उसे अधिक मूल्य मिलना चाहिए । इसे अतिरिक्त मूल्य सिद्धांत कहते हैं।

मजदूरों की आदेश वृत्ति :--

साम्यवादी ध्येय प्राप्त करने के लिए मजदूरों को संगठित होकर पूंजीपतियों के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए। इनका क्रांति का शस्त्र निम्नलिखित कार्य करेगा --

1) समाज के सभी उत्पादन साधनों पर केवल समाज का ही अधिकार रहेगा।
2) मजदूरों का विरोध करने वाले लोगों को नष्ट किया जाएगा।
3) मजदूरों के पास शासन व्यवस्था रहेगी।

मार्क्स के धर्म विषयक विचार :: –

मार्क्स के अनुसार धर्म एक अफीम की गुटिका है। इसी कारण आज तक अनपढ़, गरीब, भोले, भाले, निरक्षर लोगों का शोषण होता आया है। इसके लिए हिंदुओं की वर्ण व्यवस्था, रूढी परंपरा आदि जिम्मेदार है। दलित, पीड़ित लोग धार्मिक कर्मकांड के कारण समाज के हाथों की कठपुतली बन जाते हैं। मार्क्स के मतानुसार जिस प्रकार अफीम खाने के बाद एक प्रकार का नशा छा जाता है उसी प्रकार धर्म का नशा लोगों पर छा जाता है। यह धर्म सामान्य लोगों का खून चूसता है। उसी कारण मार्क्स ने धर्म का विरोध किया। मार्क्स ईश्वर को काल्पनिक मानता है। ईश्वर का अस्तित्व मनुष्य की रचना से बना है। अतः मार्क्स कल्पना को छोड़कर यथार्थ जीवन से परिचित करता है। मार्क्स ने धर्म के ठेकेदारों का भी विरोध किया।

मार्क्स के नारी विषयक विचार ::–

मार्क्स ने नारी को स्वतंत्र माना। पुराने जमाने से समाज ने नारी पर घोर अत्याचार किए। उसका शोषण किया। नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं पर मार्क्स ने चर्चा की। सृष्टि के प्रारंभ में समाज में स्त्री और पुरुष का समान स्थान था। कुछ दिनों पश्चात वे टोली में रहने लगे और इन टोलियो में संघर्ष होने लगे। संघर्ष के लिए शक्तियों की आवश्यकता थी। नारी कमजोर होने के कारण वह घर में रहने लगी और संघर्ष का काम पुरुषों ने अपने कंधों पर लिया। धर्म के ठेकेदारों ने स्त्री के लिए अनेक परंपराएं बनाई। उसे सदा के लिए अपना गुलाम बनाया। सती प्रथा शुरू हुई, समस्त व्रत, उपवास, तौर-तरीके स्त्री के जिम्मे आया। इसी के फलस्वरूप सामंतवादी व्यवस्था में नारी को केवल भोग का विषय माना। वह महल की शोभा बन गई। मजदूरों में वह उत्पादकों का साधन बन गई। आधुनिक युग में यांत्रिक प्रगति हुई। उसका दिन-ब-दिन शोषण

होने लगा इसलिए मार्क्स नारी को पुरुष की दास्यता से मुक्त कर उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करता है। आगे चलकर मार्क्स ने कहा कि समाज में नारी शक्ति तभी बढ़ सकती है जब दोनों का अस्तित्व समान हो। परिवार की जिम्मेदारी दोनों पर है अतः हम कह सकते हैं कि मार्क्स में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व का खयाल रखा।